दुष्यंत कुमार

के साहित्य का पुनर्मूल्यांकन

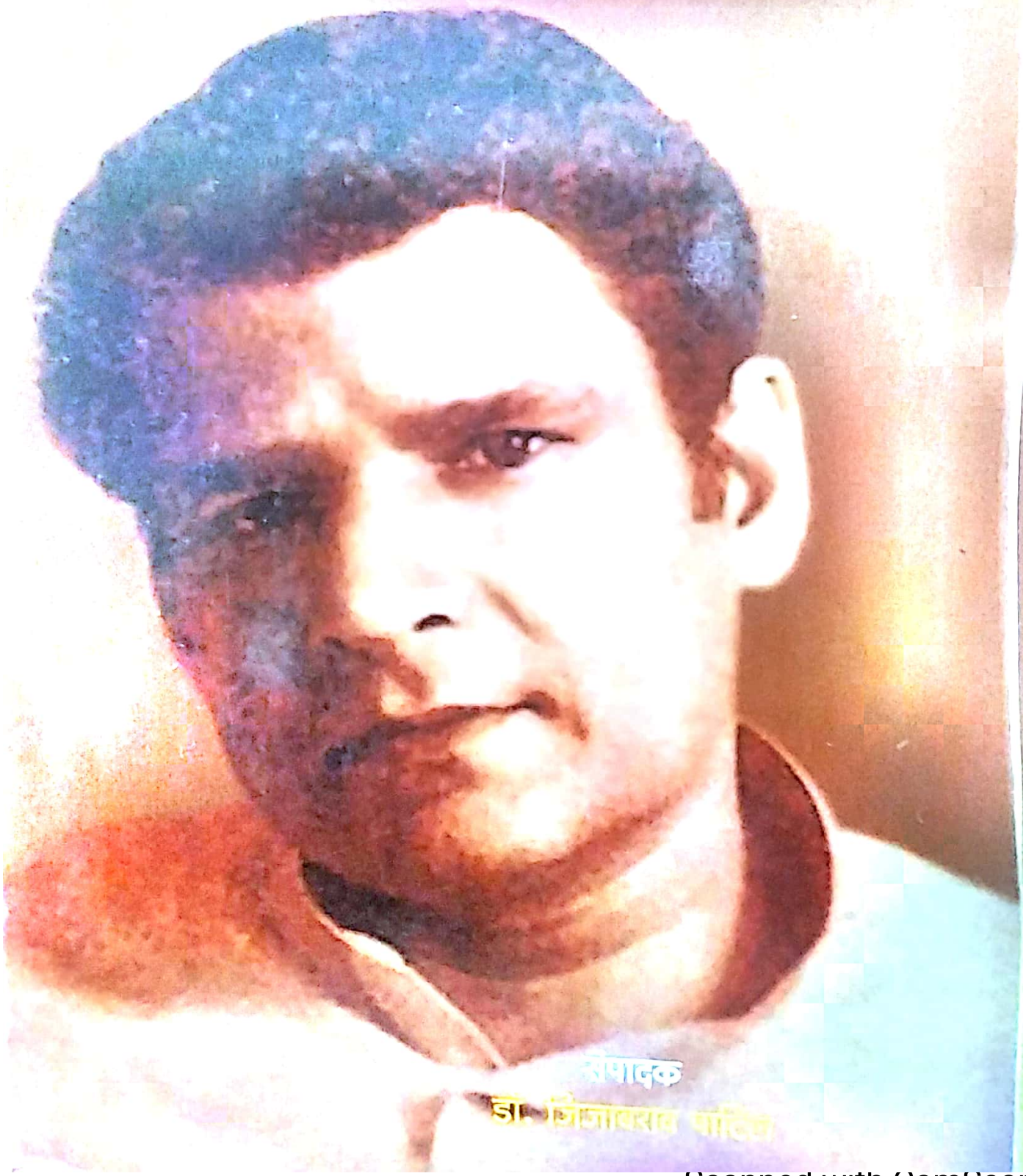

संपादक

डा. [illegible]

Scanned with CamScanner

दुष्यंत कुमार के साहित्य का पुनर्मूल्यांकन

संपादक : प्रा. जिजाबराव पाटिल

प्रकाशक : रोली प्रकाशन,
सी. 449, गुजैनी,
कानपूर, 208022.
दूरभाष : (0512) 2285003
भ्रमणध्वनि: 09415133173

मुद्रक : प्रशांत पब्लिकेशन्स,
3, प्रताप नगर, श्री संत ज्ञानेश्वर मंदिर रोड,
नूतन मराठा महाविद्यालय के पास,
जलगाँव 425001.
दूरभाष : (0257) 2235520, 2232800
ईमेल : prashantpublication.jal@gmail.com

संस्करण : प्रथम 2017 ISBN : 978-93-84478-39-1
© संपादक
शब्दसज्जा: प्रशांत पब्लिकेशन्स

मूल्य : ₹ 500/-

Dhushyant Kumar Ke Sahitya Ka Punrmulyankan
Edited by : Dr. Jijabrao Patil

Price : Five Hundred Only

Scanned with CamScanner

- आम आदमी के जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति 'साये में धूप' 363
  डॉ. कल्पना पाटिल
- दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में आजादी के बाद हुई देश की दुरावस्था का चित्रण.....367
  प्रा. आर. डी. गवारे
- दुष्यंतकुमार की ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना 370
  प्रा. निंबा लोटन वाल्हे
- संवेदना के सशक्त चितेरे – दुष्यंत कुमार 376
  डॉ. गिरीश एस. कोळी

Scanned with CamScanner

दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में आजादी के बाद हुई देश की दुरावस्था का चित्रण

प्रा. आर.डी.गवारे

दुष्यंत कुमार हिंदी ग़ज़ल के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उनकी ग़ज़ले आजादी के बाद की मोहभंग की स्थिति को प्रस्तुत करती है। भारत आजाद तो हुआ लेकिन जो बुनियादी समस्याएँ थी वह कम नही हुई थी। इसलिए दुष्यंतकुमार ने अपनी कलम के माध्यम से- क्रांति की भावना- पैदा करने की कोशिश-की है। उनकी ग़ज़ले व्यवस्था के प्रति सोचने के लिए मजबूर करती है। आजादी के बाद भी आम वर्ग भूख, शोषण, बेरोजगारी, गरिबी से जूझ रहा है। ऐसी स्थिति में एक साहित्यकार- चूप कैसे बैठ सकता है। इस कवि ने आपात काल मे हुहा था, मत 'मत कहो आकाश मे कुहरा घना है, यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है'

निदा फाजली उनके बारे में लिखते है, ''दुष्यंत की नजर उनके युग को नई पीढी के गुस्से और नाराजगी से सजी बनी है। यह गुस्सा और नाराजगी उस अन्याय और राजनीति के कुकर्मो के खिलाफ नए तेवरो की आवाज थी, जो समाज में मध्यवर्गीय झूठेपन की जग पिछडे वर्ग की मेहनत और दया को नुमांदगी करती है।''

दुष्यंतकुमार 'कैसे मंजर सामने आने लगे है' इस ग़ज़ल मे कहते है कि, ''अब तो इस तालाब का पानी बदल दो, ये कँवल के फूल कुम्हलाने लगे है।''

अर्थात यहाँ की व्यवस्था अब गंदी हो चूकी है। हमारे नेता, अफसर भ्रष्टाचार कर रहे है। यहाँ बेईमान लोग मजे कर रहे है और ईमानदार तकलीफे झेल रहे है। इसलिए ग़ज़लकार कहते है,

''कैसे मंजर सामने आने लगे है
गाते-गाते लोग चिल्लाने लगे है।''

दुष्यंतकुमार आम आदमी को व्यवस्था के प्रति सचेत करना चाहते है। व्यवस्था के ठेकेदारो ने जो सपने दिखाए थे वे सब खोकले साबित हुए। आजादी पाने के लिए क्रांतिकारक शहीद हुए। लेकिन आजादी के बाद लोक तंत्रात्मक समाजवाद लाने का सपना सही अर्थो में पुरा नहीं हो सका। ग़ज़लकार का स्वर आक्रोश से भरा हुआ है। वे कहते है,

Scanned with CamScanner

"हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
आज यह दीवार परदो की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने मे सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।"

इससे स्पष्ट होता है कि ग़ज़लकार आम लोगो को हो रही पीड़ा को पर्वत समान मानता है। क्रांति की भावना पैदा कर परिवर्तन लाया जा सकता है। इस बात पर उनका विश्वास है। यहाँ लोगो को विकास के बहुत बड़े-बड़े वादे किए गए लेकिन स्थिति काफी गंभीर बनी हुई है। दुष्यंतकुमार कहते है,

"कहाँ तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए"

बताया तो गया था कि हर एक को विकास का लाभ पहुँचेगा। हर एक घर में चिराग जलेगा लेकिन घर तो छोडो पूरे शहर के लिए भी चिराग मयस्सर नहीं है।

"यहाँ दरखतों के साये में धूप लगती है
चलो यहाँ से चलो और उम्र भर के लिए।"

यहाँ ग़ज़लकार ने जो बात कही है वह हमारी स्वतंत्र भारत की व्यवस्था पर करारा तमाचा है। 'दरखतो की साये में धूप लगना' यह हामारे नेताओं की नाकामी का प्रतीक है। दुष्यंतकुमार आम आदमी को विश्वास दिलाते है कि अभी भी वक्त है। इस व्यवस्था से डटकर लडने का । वे कहते है,

"इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है,
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।
एक चिंगारी कहीं से ढूँढ लाओ दोस्तो,
इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है।
दुख नहीं कोई कि अब उपलब्धियो के नाम पर,
और कुछ हो या न हो, आकाश-सी छाती तो है।"

यहाँ दुष्यतकुमार 'आकाश -सी छाती' से द्वारा आम आदमी ने जो सहा है उसकी सहनशीलता की तारिफ भी करते है लेकिन 'एक चिंगारी' से माध्यम से सब जलकर खाक होने मे देर नही लगेगी इस और भी ध्यान खींचते है।

"मेले मे भटके होते तो कोई घर पहूँचा जाता
हम घर मे भटके है कैसे ठोर- ठिकाने आएँगे।"

यहाँ स्थिति इस तरह की है कि हमारा शत्रू कोई और नहीं बल्कि हमारे घर

का ही है आज देश में भूख से लोग मर रहे है और दिल्ली की संसद में बहसे हो रही है।

"भूख है तो सब्र कर रोटी नहीं तो क्या हुआ
आजकल दिल्ली में है, जेर-ए-बहस ये मुद्दआ।"

एक और देश में अनेक प्रकार की समस्याएँ है और उसमे मनुष्य संवेदनहीन होता जा रहा है। उसे दूसरों के दु:खों की कोई पर्वा नहीं है। वह सिर्फ अपना फायदा हो तभी दूसरे के बारे में सोचता है।

"इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात
अब किसी भी बातपर खुलती नहीं है। खिडकियाँ।"

संक्षेप में कह सकते है कि दुष्यत कुमार ने अपनी प्रतिभा क्षमता के बल पर देश की हुई दुरावस्था का जिस निर्भयता एवं निडरता के साथ चित्रण किया है वह काबिले तारिफ है। उन्होंने साहित्यकार होने के के कर्तव्य को बखुबी निभाया है। उनकी ग़ज़ले स्वतंत्रता के बाद देश की हुई दुरावस्था का जिवंत दस्तावेज है। जिसमें खीझ है, आक्रोश है तथा आम आदमी को जागने का संदेश है। जिस उद्देश्य को लेकर देश के वीर शहीद हुए वह उद्देश्य सफल नहीं हो सका। दुष्यंतकुमार ने अपनी बहुत सी ग़ज़लों मे सत्ता केंद्र को निशाना बनाया है। जब तक आम आदमी अपनी दुरावस्था के लिए जिम्मेदार लोगों के प्रति आक्रोश से नहीं भरता तब तक परिवर्तन नहीं हो सकता। दुष्यंतकुमार की ग़ज़लें आम आदमी को जगाकर देश और अपनी दुरावस्था के प्रति सचेत कर जागरण का संदेश देता है। कई मायनों में दुष्यंतकुमार एक कालजयी ग़ज़लकार है। जहाँ ग़ज़ल नाम आएगा वहाँ दुष्यंतकुमार नाम आए बिना नहीं रहेगा।

संदर्भ :-

1) साये मे धूप - दुष्यंतकुमार
2) रचनाकार दुष्यंत कुमार - डॉ. किशोर
3) ग़ज़लकार दुष्यंत कुमार - डॉ. अविनाश कासांडे
4) हिंदी ग़ज़ल के प्रमख हस्ताक्षर - डॉ. मधु खराटे

▽▽▽

Scanned with CamScanner

डॉ. जिजाबराव पाटिल

जन्म:

५ जनवरी, १९७२

हातनुर, तह. शिंदखेडा, जि. धुलियाँ

शिक्षा:

एम.ए., बी.एड, सेट (SET), पीएच.डी.(हिंदी)

उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव (महाराष्ट्र)

प्रकाशन:

सुरेंद्र वर्मा व्यक्ति और अभिव्यक्ति (ग्रंथ)

कई पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में लेख प्रकाशित

विशेष:

आंतर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय संगोष्ठियों में सहभाग और आलेख प्रस्तुत एवं प्रकाशित

स्नातकोत्तर हिंदी अध्यापक मान्यता

आकाशवाणी पर वार्ताएँ प्रसारित

महासचिव - उत्तर महाराष्ट्र हिंदी प्राध्यापक परिषद

संप्रति:

हिंदी विभागाध्यक्ष

श्री सेठ मुरलीधरजी मानसिंगका साहित्य, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, पाचोरा, जि. जलगाँव (महाराष्ट्र)

संपर्क:

२७, मातोश्री लक्ष्मीबाई वाघ नक्षर, रिंग रोड, पाचोरा, जि. जलगाँव (महाराष्ट्र)

भ्रमणध्वनि:

८२७५५८८९६१

रोली प्रकाशन

मुद्रक: प्रभात पब्लिकेशन्स, जलगाँव

ISBN 978-93-84478-39-1

Scanned with CamScanner